बढ़ती असहिष्णुता का क्षेत्र

लेखक- सैयद मुनीर खसरू

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

26 अक्टूबर, 2021

दक्षिण एशिया के राजनीतिक नेतृत्व के लिए सभी प्रकार के धार्मिक उग्रवाद के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाने का समय आ गया है।

इस महीने बांग्लादेश में दुर्गा पूजा मंडपों, हिंदू मंदिरों और घरों पर हमला किया गया था। इन हमलों ने अफवाहों का पालन किया कि कुरान को एक पंडाल में अपवित्र किया गया था। प्रधानमंत्री शेख हसीना के प्रशासन ने हिंदुओं को सुरक्षा देने का आश्वासन दिया और उन जिलों में अतिरिक्त सुरक्षा बलों को तैनात किया जहाँ हमले हुए थे। प्रधानमंत्री के आश्वासन के कुछ घंटे बाद इस्कॉन मंदिर पर हमला किया गया। इन हमलों में कम से कम पाँच लोग मारे गए हैं।

संघर्ष की विरासत

भारतीय उपमहाद्वीप में धार्मिक तनाव कोई नई बात नहीं है। विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच अक्सर संघर्ष छिड़ जाता है, और अल्पसंख्यकों को निशाना बनाया जाता है। 1992 में अयोध्या में *बाबरी मस्जिद विध्वंस* के कारण दंगे हुए, जिसमें लगभग 2,000 लोग मारे गए थे। 1993 के बॉम्बे बम विस्फोट, कोलंबो में 2019 ईस्टर हमले और पिछले एक दशक में पाकिस्तान में लगातार आतंकी हमले अन्य उदाहरण हैं।

बांग्लादेश के मामले में, जहाँ हिंदू आबादी का लगभग 9% और मुसलमान 90% हैं, हिंदू अल्पसंख्यक के खिलाफ हमले या तो देश के भीतर या पड़ोसी भारत में धर्म के नाम पर किए गए कृत्यों के प्रतिशोध हैं, या चरमपंथी विचारों के कारण हैं। उदाहरण के लिए, अयोध्या में बाबरी मस्जिद के विध्वंस ने बांग्लादेश में एक हिंसक प्रतिक्रिया को उकसाया और भीड़ ने कई हिंदू-मंदिरों को ध्वस्त करना शुरू कर दिया।

आस्था-आधारित संघर्ष 'देशों के भीतर और दो देशों के बीच', दोनों जगह होते हैं। भारत-पाकिस्तान प्रतिद्वंद्विता धार्मिक और राजनीतिक क्षेत्रों से लेकर खेल तक फैली हुई है- दोनों टीमों के बीच क्रिकेट मैच सामान्य से अधिक दर्शक देखते हैं। 1971 में बांग्लादेश का पाकिस्तान से अलग होना इस बात का उदाहरण था कि कैसे संस्कृति भी किसी देश को अलग करने या एकजुट करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

हाल के दिनों में, दक्षिणपंथी दल उपमहाद्वीप पर शासन कर रहे हैं, प्रमुख धार्मिक आबादी का समर्थन प्राप्त कर रहे हैं और धार्मिक अल्पसंख्यकों को कमजोर कर रहे हैं। भारत में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) और पाकिस्तान में तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) इसके उदाहरण हैं। 2019 में भारतीय संसद में पारित विवादास्पद नागरिकता (संशोधन)

अधिनियम नागरिकता का एक विश्वास-आधारित परीक्षण था और उपमहाद्वीप में रैलियों और विरोध प्रदर्शनों को उकसाया गया था। सुश्री हसीना ने कानून को "अनावश्यक" कहा। अफगानिस्तान में तालिबान के उदय को पीटीआई नेता और पाकिस्तान के प्रधान मंत्री इमरान खान ने समर्थन दिया था। उपमहाद्वीप हिंदुओं और मुसलमानों के ध्रुवीकरण की ओर बढ़ रहा है।

अलग-अलग प्रतिक्रियाएं

बांग्लादेश में, यह सराहनीय है कि सरकार धार्मिक चरमपंथी समूहों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करती है और त्यौहारों के दिनों में धार्मिक स्थलों पर सुरक्षा सुनिश्चित करके सभी धर्मों के त्यौहारों के उत्सव को बढ़ावा देती है। मुस्लिम, दुर्गा पूजा पर हिंदू मंदिरों में जाते हैं या होली मनाते हैं और ईद पर हिंदुओं को आमंत्रित करते हैं। बांग्लादेश ने धार्मिक चरमपंथी हमलों से निपटने के लिए अपने सुरक्षा बलों से एक मजबूत आतंकवाद विरोधी विंग विकसित किया है।

आतंकवाद विरोधी इकाई ने अनगिनत नियोजित हमलों को रोका है और कई चरमपंथी समूहों को जेल में डाला है। कुछ लोगों को मौत की सजा सुनाई गई है, जिनमें जुलाई 2016 में स्थानीय-कैफे *'होली आर्टिसन'* के हमले में शामिल लोग शामिल हैं। बांग्लादेश ने कैफे हमले के बाद से न केवल आतंकवादी समूहों पर नकेल कसी है, बल्कि हिंसा को रोकने के लिए धार्मिक प्रदर्शनकारियों की सभा को भी रोका है। उदाहरण के लिए, हाल ही में फ्रांस के इस्लाम विरोधी कानूनों के विरोध में मुस्लिम चरमपंथी समूहों की एक सभा को कानून लागू करने वालों द्वारा बाधित किया गया था।

दूसरी ओर, भारत में, गरीब मुसलमानों पर हमला करने वाले गौरक्षकों के खिलाफ त्वरित कार्रवाई नहीं करने और फिर सीएए को लागू करने के लिए सरकार की आलोचना हुई। पूरे देश में कानून के खिलाफ विरोध प्रदर्शन शुरू हो गए और प्रशासन ने उन्हें विभाजनकारी बयानबाजी और भारी-भरकम प्रतिक्रिया के साथ जवाब दिया।

दुर्भाग्य से, दक्षिण एशियाई राजनीतिक नेतृत्व के पास इस अवसर पर उठने और सभी प्रकार के धार्मिक अतिवाद और कट्टरता के खिलाफ जीरो टॉलरेंस का एक स्पष्ट संदेश भेजने के लिए एक साथ खड़े होने के लिए एक दृष्टि और साहस की आवश्यकता है। जब धर्म राजनीतिक लाभ प्राप्त करने का एक साधन बन जाता है, तो परिणामी घृणा और असहिष्णुता की ज्वाला तेजी से फैलती है। इसमें जंगल की आग बनने की क्षमता है जो रास्ते में आने वाली हर चीज को खा जाती है। इस तरह की आग और रोष इस क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक आकांक्षाओं को ही नुकसान पहुँचा सकता है। अफगानिस्तान में तालिबान का उदय दक्षिण एशिया के राजनीतिक नेतृत्व के लिए सभी प्रकार के धार्मिक हठधर्मिता और उग्रवाद के खिलाफ एक संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए एक जागृत कॉल है। बंटवारे के पचहत्तर साल बाद, सद्भाव, धार्मिक सहअस्तित्व और सहिष्णुता सभी खतरे में हैं। जब गरीबी उन्मूलन, जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा जैसे कई ज्वलंत मुद्दों को हल करना है तो क्या यह क्षेत्र इस तरह की निकट दृष्टि को बर्दाश्त कर सकता है?

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. हाल ही में किस देश मे हिंदुओं के विरुद्ध हिंसा बड़े पैमाने पर हुई है?

(a) पाकिस्तान

(b) अफगानिस्तान

(c) श्रीलंका

(d) बांग्लादेश

Expected Questions (Prelims Exams)

Q. In which country has violence against Hindus happened on a large scale recently?

(a) Pakistan

(b) Afghanistan

(c) Sri Lanka

(d) Bangladesh

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. "दक्षिण एशियाई क्षेत्र विशेषकर भारतीय उपमहाद्वीप में पिछले कुछ वर्षों में धार्मिक असहिष्णुता का स्तर बढ़ा है। ऐसे में संबंधित देशों की सरकारों को राजनीतिक-सामाजिक एकीकृत नीति का निर्माण करना होगा।" टिप्पणी करें।

(250 शब्द)

Q. "The level of religious intolerance has increased in the South Asian region especially in the Indian subcontinent in the last few years. In such a situation, the governments of the respective countries will have to formulate a politico-social integrated policy." make a comment.

(250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।